यूरोप में सामंतवाद (Feudalism) के उदय के कारण कई सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य कारकों से जुड़े हुए थे। इसे मुख्य रूप से मध्ययुगीन काल (9वीं से 15वीं शताब्दी) की प्रमुख राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखा जाता है। इसके उदय के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

1. रोमन साम्राज्य का पतन (476 ईस्वी)

- पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद यूरोप में एक राजनीतिक शून्यता आ गई।
- केंद्रीय सत्ता के अभाव में स्थानीय शासकों ने स्वायत्तता हासिल की, जिससे सामंतवादी व्यवस्था का जन्म हुआ।

2. आक्रमण और असुरक्षा

- 8वीं से 10वीं शताब्दी के बीच वाइकिंग्स (Scandinavia), मैज्यार (Hungary) और अरब आक्रमणकारियों ने यूरोप में तबाही मचाई।
- लोगों को स्थानीय सुरक्षा की आवश्यकता थी, जिससे वे शिरतशाली सरदारों या स्थानीय राजाओं के संरक्षण में आ गए।

3. जागीरदारी प्रणाली (Manorial System)

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के कारण जागीरदारों (Lords) ने किसानों को भूमि प्रदान की और बदले में उनसे कर व श्रम लिया।
- यह प्रणाली धीरे-धीरे स्थायी हो गई और सामंतवाद की नींव बनी।

4. चर्च और ईसाई धर्म का प्रभाव

- रोमन कैथोलिक चर्च ने स्थानीय शासकों को शिरत दी और सामंतवादी संरचना को वैधता प्रदान की।
- चर्च स्वयं भी एक बड़ा जागीरदार था और सामंतों के साथ गठजोड़ कर शासन करता था।

5. सैन्य और घुड़सवार सेना (Knights)

- युद्धों में प्रभावी भागीदारी के लिए योद्धा वर्ग (Knights) को भूमि देकर उनसे सैन्य सेवा ली जाती थी।
- यह 'वसालता' (Vassalage) की अवधारणा को जन्म देता है, जिसमें छोटे जागीरदार बड़े सामंतों के अधीन होते थे।

6. स्थानीय स्वायत्तता और शहरीकरण की कमी

- व्यापार और नगरों के सीमित विकास के कारण लोग ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बने रहे।
- इससे कृषि और भूमि आधारित सत्ता प्रणाली विकसित हुई, जो सामंतवाद की नींव बनी।

निष्कर्ष

सामंतवाद का उदय मुख्य रूप से राजनीतिक अस्थिरता, बाहरी आक्रमणों, सैन्य संरचना और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के कारण हुआ। यह यूरोप में मध्ययुगीन काल की प्रमुख सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था बनी रही, जब तक कि पुनर्जागरण, व्यापारिक पूंजीवाद और केंद्रीकृत राष्ट्र-राज्यों का विकास नहीं हुआ।